प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी

रविदास जी द्वारा लिखित एक भजन

पद १

प्रभु जी, तुम चन्दन हम पानी।
जाकी अंग-अंग बास समानी॥

हे प्रभु, आप चन्दन हैं और मैं पानी हूँ :
आपकी सुगन्ध मेरी सम्पूर्ण सत्ता में व्याप्त है।
आपकी सुगन्ध हर वस्तु में व्याप्त है।

पद २

प्रभु जी, तुम घन-बन हम मोरा।
जैसे चितवन चन्द्र चकोरा॥

हे प्रभु, आप बादल हैं और मैं चातक पक्षी हूँ;
अपने मन के अरण्य में मैं आपको निहार रहा हूँ,
जैसे चकोर पक्षी चन्द्रमा को निहारता है।

पद ३

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती।
जाकी ज्योति बरै दिन-राती॥

हे प्रभु, आप दीपक हैं और मैं बाती हूँ :
आपकी ज्योत रात-दिन प्रभासित रहती है।

पद ४

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा।
जैसे सोन में मिलत सुहागा॥

हे प्रभु, आप मोती हैं और मैं धागा हूँ।
आपके साथ होने से, मुझे ऐसा लगता है मानो सोने को मीठी सुगन्ध मिल गई है।

पद ५

प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा।
ऐसी भक्ति करै रैदासा॥

हे प्रभु, आप स्वामी हैं और मैं आपका दास हूँ।
कृपा करके रविदास को निरन्तर ऐसी भक्ति का अनुभव करने दें।

प्रभु जी, तुम चन्दन हम पानी।
जाकी अंग-अंग बास समानी॥

हे प्रभु, आप चन्दन हैं और मैं पानी हूँ :
आपकी सुगन्ध मेरी सम्पूर्ण सत्ता में व्याप्त है।
आपकी सुगन्ध हर वस्तु में व्याप्त है।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

अंग्रेज़ी भाषान्तर, गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक *Enthusiasm* से [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९९७] पृ. ६७, ७०, ७७ और ८०।